तीर्थधाम सम्मेदशिखर में निर्माणाधीन कुन्दकुन्द कहान नगर में –

शिलान्यास महोत्सव संपन्न

सम्मेदशिखरजी : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा तीर्थधाम सम्मेदशिखर में निर्माणाधीन संकुल श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनमन्दिर की पाँच वेदिओं का शिलान्यास दिनांक 1 से 3 जुलाई 2011 तक सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित नीलेशकुमारजी मुम्बई आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 1 जुलाई को प्रात: जिनेन्द्र शोभायात्रा तेरापंथी कोठी से श्री कुन्दकुन्द कहान नगर तक आई। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री भभूतमल चंपालाल भण्डारी परिवार बैंगलोर द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई द्वारा निर्माणाधीन कार्य की प्रगति विवरण प्रस्तुत किया गया।

श्री आदिनाथ भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री रमेशभाई कोदरलाल दोशी परिवार (सुदासना) मुम्बई द्वारा, श्री महावीर भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री महावीरप्रसादजी चौधरी परिवार कोलकाता द्वारा, श्री सीमंधर भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री चक्रेशकुमार, अशोककुमार एवं सुशीलकुमार बजाज परिवार कोलकाता द्वारा, मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री नीमेषभाई केतनभाई शाह व श्री अनंतराय ए.सेठ परिवार मुम्बई द्वारा तथा श्री चंद्रप्रभ भगवान की वेदी का शिलान्यास श्री विमलकुमारजी जैन (नीरु केमीकल्स, दिल्ली) परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर इन सभी प्रतिमाओं के विराजमानकर्ता की स्वीकृति भी इन्हीं परिवारों द्वारा मिल गयी।

धार्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

चैन्नई (तमिलनाडु) : यहाँ पुषल क्षेत्र में स्थित श्री चतुर्मुख चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनमंदिर में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र, पोन्नूर हिल एवं स्थानीय मन्दिर ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 से 31 मई तक त्रिदिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जम्बूकुमारनजी शास्त्री, डॉ. धनकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित जयराजनजी शास्त्री, पण्डित नाभिराजनजी शास्त्री, पण्डित बाबूजी शास्त्री, पण्डित सोमप्रभजी शास्त्री, पण्डित जयकुमारजी शास्त्री आदि के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग 200 आत्मार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2537) 337 अंक : 1

जगत में होनहार...

जगत में होनहार सो होवै, सुर नृप नाहिं मिटावै।
जगत में होनहार...।।टेक।।

आदिनाथ से को भोजन में, अन्तराय उपजावै।
पारसप्रभु को ध्यानलीन लखि, कमठ मेघ बरसावै।।
जगत में होनहार...।।1।।

लखमण से संग भ्राता जाके, सीता राम गमावै।
प्रतिनारायण रावण से की, हनुमत लंक जरावै।।
जगत में होनहार...।।2।।

जैसो कमावै तैसो ही पावै, यों 'बुधजन' समझावै।
आप आपको आप कमावौ, क्यों परद्रव्य कमावै।।
जगत में होनहार...।।3।।

– कविवर पण्डित बुधजनजी

छहढाला प्रवचन

मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,
आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

शुद्धात्म अनुभूतिरूप निश्चयरत्नत्रय के सिवाय दूसरा कोई मोक्ष का मार्ग नहीं है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकतारूप एक ही मोक्षमार्ग है; जुदे-जुदे तीन मोक्षमार्ग नहीं हैं। जहाँ सम्यग्दर्शन हो, वहाँ सम्यग्ज्ञान भी साथ में होता ही है और वहाँ अनन्तानुबंधी कषाय के अभावरूप चारित्र का अंश भी होता है। इसप्रकार शुद्ध रत्नत्रयरूप एक ही मोक्षमार्ग है। हाँ, उस रत्नत्रय की शुद्धि में तारतम्यरूप से अनेक प्रकार पड़ते हैं, तो भी उनकी जाति एक-सी ही है; रत्नत्रय की जितनी शुद्धता है, उतना ही मोक्षमार्ग है, दूसरा कोई मोक्षमार्ग नहीं है।

प्रश्न – अनेक जगह निश्चय और व्यवहार ऐसे दो प्रकार का मोक्षमार्ग कहा है और आप तो मोक्षमार्ग एक ही कहते हो, तो क्या इसमें विरोध नहीं आता ?

उत्तर – नहीं, सच्चा मोक्षमार्ग एक ही है और दूसरा कोई सच्चा मोक्षमार्ग नहीं है – ऐसा निर्णय करके सच्चे मोक्षमार्ग को ही मोक्षमार्गरूप से ग्रहण करना अविरुद्धता है। निश्चयमोक्षमार्ग भी मार्ग है और व्यवहारमोक्षमार्ग भी मार्ग है – ऐसा दोनों को सच्चा मानकर अंगीकार करने से तो विरोध आता है। एक निश्चयमोक्षमार्ग ही सच्चा है; और दूसरा मार्ग कहना तो उपचार मात्र है, वह सच्चा मार्ग नहीं है – ऐसी पहचान करने से ही सच्चे मोक्षमार्ग का ज्ञान होता है और उसमें ही दोनों नयों के सच्चे अर्थ का स्वीकार होता है।

आत्मा के शुद्ध स्वभाव की अनुभूतिस्वरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का शुद्ध वीतराग परिणाम सच्चा मोक्षमार्ग है अर्थात् निश्चय से वास्तविक मोक्षमार्ग वही है और वहीं पर, जो सच्चा मोक्षमार्ग तो नहीं है; परन्तु मोक्षमार्ग के साथ निमित्तरूप से विद्यमान है, उसको भी मोक्षमार्ग कहना व्यवहार है।

'कारण सो ववहारो' – व्यवहार को निश्चयमोक्षमार्ग का कारण कहना भी उपचार है अर्थात् निमित्तरूप है – ऐसा समझना। जैसे बिना उपादान का निमित्त वास्तव में निमित्त नहीं है, वैसे निश्चय की अपेक्षा से रहित व्यवहार वास्तविक व्यवहार नहीं है। निश्चय के बिना अकेला व्यवहार होता ही नहीं; अत: पहले अकेला व्यवहार हो और उसके द्वारा निश्चय की प्राप्ति हो जाये – यह बात सच्ची नहीं है। इसप्रकार निश्चय और व्यवहार दोनों साथ में रहते हैं; तथापि उनमें सत्य मोक्षमार्ग तो एक ही है; दो नहीं।

मोक्षमार्ग का सच्चा निर्णय करने के लिए यह बात प्रयोजनभूत होने से विस्तार से कही है। साधक की एक पर्याय में निश्चय-व्यवहार दोनों साथ में रहते हैं, उनमें निश्चयरत्नत्रय तो सत्यार्थ मोक्षमार्ग है और उसके अनुकूल श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र के शुभ विकल्प में मोक्षमार्ग का व्यवहार करना उपचार है, वह सत्यार्थ नहीं है। निश्चय और व्यवहार दोनों मिलकर एक मोक्षमार्ग नहीं है।

– शुद्ध आत्मा का श्रद्धान ही एक सम्यग्दर्शन है।

– शुद्ध आत्मा का ज्ञान ही एक सम्यग्ज्ञान है।

– शुद्ध आत्मा में लीनता ही एक सम्यक्चारित्र है।

– ऐसा शुद्ध सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही एक मोक्षमार्ग है।

– व्यवहार के विकल्पों का/ राग का उसमें अभाव है।

निश्चय की भूमिका में उसके योग्य व्यवहार होता है, उसका स्वीकार है; परन्तु उसे सत्य मोक्षमार्गरूप से ज्ञानी नहीं स्वीकारते।

प्रश्न – जो व्यवहार रत्नत्रय यदि सच्चा मोक्षमार्ग नहीं है, तो फिर उपचार से भी उसको मोक्षमार्ग क्यों कहा ?

उत्तर – क्योंकि, निश्चय के साथ में उस भूमिका में ऐसा ही व्यवहार निमित्तरूप से होता है; विपरीत नहीं होता – ऐसा उस भूमिका का ज्ञान कराने के लिए उसमें

मोक्षमार्ग का उपचार है। जैसे बिल्ली में बाघ का उपचार यह सूचित करता है कि बिल्ली स्वयं सच्चा बाघ नहीं है, सच्चा बाघ उससे भिन्न है; वैसे व्यवहार में मोक्षमार्ग का उपचार यह सूचित करता है कि व्यवहार स्वयं सच्चा मोक्षमार्ग नहीं है, सच्चा मोक्षमार्ग उससे भिन्न है। 'ज्ञानस्वरूप आत्मा है' इतना गुण-गुणी भेद के विकल्परूप व्यवहार भी मोक्ष का साधन नहीं हो सकता, तब फिर अन्य स्थूल बाह्यलक्ष्यी राग की तो क्या बात ?

जिसप्रकार मोक्षमार्ग दो नहीं, एक ही है; उसीप्रकार -

- मोक्षमार्ग में जो सम्यग्दर्शन है, वह भी दो नहीं; एक ही है।
- मोक्षमार्ग में जो सम्यग्ज्ञान है, वह भी दो नहीं; एक ही है।
- मोक्षमार्ग में जो सम्यक्चारित्र है, वह भी दो नहीं; एक ही है।

यद्यपि सम्यग्दर्शन के तीन भेद हैं, सम्यग्ज्ञान के पाँच भेद हैं और सम्यक्चारित्र के पाँच भेद हैं, तथापि उन सबमें स्वद्रव्य के आश्रय का प्रकार एक ही है, दर्शन-ज्ञान-चारित्र का कोई भी अंश परद्रव्य के आश्रित नहीं है और उसमें कहीं भी राग नहीं है।

भगवान आत्मा महान पदार्थ है, उसमें अंतर्मुख श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र ही मोक्षमार्ग है; उससे भिन्न और कोई मोक्षमार्ग कहना, वह तो वचन का विलास है, उसका वाच्य तो निमित्त या राग है; परन्तु मोक्षमार्ग का सत्य स्वरूप वह नहीं है। सत्य मोक्षमार्ग शुद्ध आत्मा की अनुभूति में ही समाता है, वह निर्विकल्प है, उसमें कोई विकल्प नहीं, राग नहीं। ऐसे मोक्षमार्ग का प्रारम्भ चौथे गुणस्थान से होता है। श्री समन्तभद्रस्वामी ने 'गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो निर्मोहो...'- ऐसा कहकर सम्यग्दृष्टि-गृहस्थ को भी मोक्षमार्ग में स्वीकार किया है। अत: यदि कोई ऐसा कहे कि चौथे-पाँचवें-छठवें गुणस्थान में एकान्त व्यवहार मोक्षमार्ग ही होता है और बाद में सातवें गुणस्थान से अकेला निश्चय-मोक्षमार्ग होता है, तो यह बात सत्य नहीं है। चौथे गुणस्थान से ही दोनों एक साथ हैं। उनमें शुद्धता का जितना अंश है, वह सच्चा मोक्षमार्ग है और जो रागादि है, वह मोक्षमार्ग नहीं है। ऐसे सभी प्रकार से पहचान कर सत्य मोक्षमार्ग को अंगीकार करना चाहिए।

अहो ! ऐसा सरस-सुन्दर-स्वाधीन मोक्षमार्ग ही महान सुख का कारण है - ऐसा जानकर बहुमानपूर्वक उसका सेवन करो। ●

नियमसार प्रवचन –

विभावस्वभावों का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 41वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।41।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं ।।41।।

जीव को क्षायिकभाव के स्थान नहीं हैं, क्षयोपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं, औदयिकभाव के स्थान नहीं हैं अथवा उपशमस्वभाव के स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

औदयिक आदि चारों भाव आवरणसंयुक्त हैं; अत: उनका आश्रय करने योग्य नहीं है।

यहाँ क्षायिकभाव को भी आवरणसंयुक्त कहा – ऐसा क्यों? पूर्वोक्त चारों भाव आवरणसंयुक्त होने से मुक्ति में कारण नहीं हैं। औदयिकभाव में कर्मों का उदय है, उपशमभाव में कर्मों का उपशम है, क्षयोपशमभाव में कर्मों का क्षयोपशम है। यह सब आवरणसंयुक्त हैं यह बात तो ठीक है; किन्तु क्षायिकभाव तो कर्म के क्षय से उत्पन्न होता है, फिर भी यहाँ उसको आवरणसंयुक्त कहने का कारण क्या है?

क्षायिकभाव में कर्म के अभाव की अपेक्षा आती है तथा निचली दशा में क्षायिकभाव प्रगट नहीं है और उसका विचार करने जाये तो आत्मा को आवरण होता है; अत: उसका लक्ष करने जैसा नहीं है। यहाँ उसे आवरणसंयुक्त कहने का प्रयोजन उसके ऊपर से लक्ष हटाकर परमपारिणामिकभाव पर लक्ष कराने का है।

उदय, उपशम, क्षयोपशमभाव क्षणिक पर्यायें हैं, उनके अवलम्बन से तो धर्म होता ही नहीं है और क्षायिक के लक्ष से भी राग की उत्पत्ति होती है, इसलिये उसके ऊपर से भी लक्ष हटाना चाहिये। इन चारों में से कोई भी अवलंबन लेने योग्य नहीं है।

परमपारिणामिकभाव अनादि-अनन्त एकरूप शुद्ध है, उसके आश्रय से धर्मदशा प्रगट होती है।

परमपारिणामिकभाव तीनोंकाल उपाधि तथा कर्म की अपेक्षा से रहित है, त्रिकाल एकरूप रहने वाला शुद्धभाव है, उसकी भावना से मुक्ति प्राप्त होती है; किन्तु औदयिकादि चार भावों से मुक्ति प्राप्त नहीं होती। मुमुक्षु अर्थात् पंचमभाव की भावना वाले जीव जो शुद्ध चिदानन्द स्वरूप को भाते हैं, वे वर्तमानकाल में महाविदेहक्षेत्र से मोक्ष जाते हैं, भविष्य में भी जायेंगे और भूतकाल में भी गये हैं।

जिसप्रकार छोटी पीपल में चरपराहट भरी है, वही व्यक्त होती है, वह चरपराहट पत्थरों में से अथवा पूर्वपर्याय में से नहीं आती, अन्दर शक्ति भरी है, वही व्यक्त होती है; उसीप्रकार आत्मा में शक्ति भरी है, उसमें से व्यक्तदशा होती है। स्वभाव के आश्रय से धर्म होता है। औदयिकादि भाव जीव के वास्तविक स्वरूप नहीं है, उन्हें तो जीव कहा ही नहीं है। यहाँ तो परमपारिणामिकभाव वाले जीव को ही जीव कहा है अथवा कारणपरमात्मा कहा है और उसी के आश्रय से मोक्षदशा होती है।

प्रश्न – अज्ञानी जीव के भी परमपारिणामिकभावरूप कारणपरमात्मा विद्यमान है; तथापि उसे कार्य क्यों नहीं प्रगट होता?

समाधान – अज्ञानी जीव कारणपरमात्मा का स्वीकार नहीं करता, इसलिये शुद्ध कार्य प्रगट नहीं होता। जो जीव परमपारिणामिकभावरूप कारण को स्वीकार करते हैं, उनके शुद्धदशा कार्यरूप प्रगट होती है। जिसको कारणपरमात्मा का भान नहीं ऐसे मिथ्यादृष्टि जीव को कारणस्वभाव विद्यमान होते हुए भी अविद्यमान जैसा ही है। त्रिकालीस्वभाव अथवा कारणस्वभाव का मनन करे तो कार्य प्रगट होता है। यदि मनन न करे तो प्रगट नहीं होता। चिदानन्द ध्रुवस्वभाव जब श्रद्धा-ज्ञान में विदित होकर स्वीकार होवे तब कारणरूप की यथार्थता समझ में आई कही जाय। कारण का अवलम्बन ले तो कार्य प्रगट हो। अज्ञानी को तो कारणस्वभाव का भान ही नहीं है। ज्ञानी कहते हैं कि उसको भान नहीं होने पर भी उसका स्वभाव तो शुद्धकारणरूप ही पड़ा है, किन्तु उसे भान नहीं है, इसलिये कार्य प्रगट नहीं हुआ। अतः शुद्धपरम-पारिणामिक भाव के आश्रय से मुक्ति होती है – ऐसी श्रद्धा और ज्ञान करना उचित है।

अब ४१वीं गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज दो श्लोक कहते हैं :-

(आर्या)

अंचितपंचमगतये पंचमभावं स्मरन्ति विद्वान्सः।
संचितपंचाचाराः किंचनभावप्रपंचपरिहीणाः ।।५८।।

(दोहा)

विरहित ग्रंथ प्रपंच से पंचाचारी संत।
पंचमगति की प्राप्ति को पंचमभाव भजंत।।५८।।

श्लोकार्थ : (ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्यरूप) पाँच आचारों से युक्त और

किंचित् भी परिग्रहप्रपंच से सर्वथा रहित ऐसे विद्वान पूजनीय पंचमगति को प्राप्त करने के लिये पंचमभाव का स्मरण करते हैं।

किसका स्मरण – भजन करने से मुक्ति होती है?

यहाँ मुनि की प्रधानता से बात है। आत्मा शुद्ध आनन्दकन्द है; उसका ज्ञान, प्रतीति, रमणता, विशेषशुद्धता और वीर्यरूप पाँच आचार मुनियों के होते हैं तथा उन मुनियों के बाह्याभ्यन्तर निर्ग्रन्थ दशा वर्तती है। ऐसे मुनि पूजनीय सिद्धगति को प्राप्त करने के लिए परमपारिणामिकभाव ध्रुवस्वभाव का स्मरण करते हैं अर्थात् उसमें लीन होते हैं।

देखो ! यहाँ बताया है कि किसके स्मरण करने से मोक्ष होता है।

(१) पुण्य-पाप के औदयिकभाव विकार हैं, विकार के स्मरण से विकार होता है।

(२) विकार को सम्यक् प्रकार से शान्त करे, वह उपशमभाव है। उपशमसम्यक्त्व अथवा चारित्र मात्र अन्तर्मुहूर्त्त रहता है, वह पर्याय है, उसके स्मरण से राग होता है।

(३) अपूर्ण ज्ञानदशा क्षयोपशमभाव भी पर्याय है, उसके स्मरण से राग होता है।

(४) क्षायिकभाव पूर्ण प्रगट भाव है, साधक के वह प्रगट नहीं है, अप्रगट का विचार करने से राग उत्पन्न होता है; अतः क्षायिकभाव का स्मरण भी अयोग्य है।

(५) त्रिकाली एकरूप शुद्धस्वरूप का स्मरण करने से मुक्ति होती है – यह फलितार्थ है।

जो शुद्धभाव का भजन करते हैं, वे विद्वान हैं, इनमें श्रावक और मुनि दोनों ही समाविष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न – इस स्मरण और भजन की बात किसके लिए चलती है?

समाधान – इस श्लोक में मुनि की प्रधानता से बात ली है तथा गौण में श्रावक भी आ जाते हैं। श्रावक और साधु दोनों के लिए यह बात है। नियमसार गाथा १३४ में लिखा है –

''जो श्रावक अथवा श्रमण सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की भक्ति करते हैं, उन्हें निवृत्तिभक्ति (निर्वाण की भक्ति) है – ऐसा जिनेन्द्रों ने कहा है।''

श्रावक के ११ पद हैं, उनमें प्रथमपद में दर्शनप्रतिमा वाले श्रावक की बात है। आत्मा का भान होने के उपरान्त अर्थात् चौथे गुणस्थानवाले सम्यग्दृष्टि की अपेक्षा जिसमें विशेष रमणता होती है, वह पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक दर्शन प्रतिमावाला है।

त्रिकाल एकरूप शुद्ध परमपारिणामिकभाव की आराधना करने से अपने आत्मा की श्रद्धा, ज्ञान और आंशिक रमणता प्रगट होती है – उसका नाम श्रावकपना है। जैन सम्प्रदाय में जन्म लिया इसलिए श्रावक है; ऐसा नहीं है। जैनदर्शन कोई बाड़ा नहीं है; वह तो वस्तुस्वरूप है।

इसप्रकार जो रत्नत्रय की सेवा करता है, उसके फल में अपुनर्भव स्त्री की सेवा वर्तती है अर्थात् भव के अभावस्वभावरूपी भक्ति वर्तती है। त्रिकालीशुद्ध नित्यस्वभाव और उस स्वभाव के आश्रय से ही मोक्षदशा प्रगट होती है – ऐसा जिसको भान है और जो उस मोक्षदशा के लिए ही शुद्धस्वभाव को भजता है – उसे विद्वान कहते हैं। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : स्वद्रव्य क्या है और परद्रव्य क्या है ? मोक्षार्थी जीव को किसे अंगीकार करना?

उत्तर : प्रत्यक्ष में बाह्य और भिन्न दिखनेवाले स्त्री, पुत्र, धन, मकानादि तथा एकक्षेत्रावगाही सम्बन्धवाले शरीर और अष्टकर्म तो परद्रव्य हैं ही; इनके अतिरिक्त जीव-अजीवादि सातों तत्त्वों के सम्बन्ध में उठनेवाले विकल्प भी पर हैं तथा इन सात तत्त्वों के विकल्पों से अगोचर जो शुद्ध अभेद आत्मस्वरूप है; वही एक स्वद्रव्य है, वही जीव है और एक वही अंगीकार करने योग्य है। शुद्धजीव को अंगीकार करने से शुद्धभाव प्रगट होता है। अंगीकार करने का अर्थ है ह्न उसी शुद्धजीव की श्रद्धा करना, उसी का ज्ञान करना और उसी में लीन होना।

प्रश्न : स्वयं ही अपना ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता है तो अन्य छह द्रव्य ज्ञेय और स्वयं उनका ज्ञाता है; यह ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध छोड़ना अशक्य क्यों कहा ?

उत्तर : छह द्रव्य तो ज्ञेय और स्वयं उनका ज्ञाता है। इस ज्ञेय-ज्ञायक के संबंध को छोड़ना अशक्य कहा है सो वहाँ तो निमित्त-नैमित्तिक संबंध बताया है; किन्तु यहाँ तो स्व-अस्तित्व में रहने वाला स्वयं ही ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता है ह्न इसप्रकार निश्चय बतलाकर पर का लक्ष्य छुड़ाया है।

प्रश्न : क्या ज्ञेय-ज्ञायक संबंधी भ्रम भी जीव को रहता है ?

उत्तर : हाँ, जीव से भिन्न पुद्गलादि छह द्रव्य ज्ञेय और आत्मा उनका ज्ञायक - ऐसा निश्चय से नहीं है। अरे ! राग ज्ञेय और आत्मा उनका ज्ञायक - ऐसा भी नहीं है। परद्रव्यों से लाभ तो है ही नहीं; किन्तु परद्रव्य ज्ञेय और उनका तू ज्ञाता - ऐसा भी वास्तव में नहीं है। ''मैं जाननेवाला हूँ, मैं ही जानने योग्य हूँ, मैं ही मुझे जानता हूँ, अपने अस्तित्व में जो है, वही स्वज्ञेय है।'' - इसप्रकार परमार्थ का प्रतिपादन करके पर-तरफ का लक्ष्य छुड़ाया है।

प्रश्न : प्रभू ! मैं संसाररोग से पीड़ित रोगी हूँ। इस रोग को मिटानेवाले आप जैसे वैद्य के पास आया हूँ। कोई अमोघ उपाय बतलाइये ?

उत्तर : कोई रोगी है ही नहीं। मैं रोगी हूँ - ऐसी मान्यता छोड़ दे। तेरा चैतन्यस्वभाव त्रिकाल निरोगी परमात्मस्वरूप ही है।

समाचार दर्शन -

देशभर में बाल संस्कार शिविरों की धूम

मई व जून माह में पूरे देश में बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। यहाँ ग्वालियर, साडवली-रत्नागिरी, सिद्धायतन-द्रोणगिरी, दिल्ली, जयपुर, भिण्ड, जबलपुर, जसवंतनगर, पिड़ावा, नागपुर, नौगांव, बड़ौत एवं कारंजा में लगाए गए बाल संस्कार शिविर के संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन शिविरों में हजारों बालक-बालिकाओं में जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण किया गया। बालकों के अतिरिक्त हजारों साधर्मियों ने भी धर्मलाभ लिया।

1. भिण्ड (म.प्र.) में 115 स्थानों पर ग्रुप शिविर : यहाँ से के.के.पी.पी.एस. उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट देवनगर भिण्ड एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में 115 स्थानों पर दिनांक 2 से 10 जून एवं 12 से 20 जून तक दो सत्रों में सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन अलीगढ, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं श्री कुन्दकुन्द विद्या निकेतन सोनागिर के कुल 146 विद्वानों द्वारा जैनधर्म के संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

115 स्थानों पर एक साथ आयोजित इन सामूहिक शिक्षण शिविरों में लगभग 25 हजार साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कारों को ग्रहण किया।

शिविर के प्रथम सत्र में 97 स्थानों पर एवं द्वितीय सत्र में इन्दौर के 14 स्थानों, कोलारस के 2 स्थानों पर तथा नरवर व लुकवासा में उक्त शिविर के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार किया गया।

इन्दौर के सभी स्थानों का निरीक्षण ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा किया गया।

- सुरेशचंद जैन

2. नागपुर (महा.) में 27 स्थानों पर ग्रुप शिविर : यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 11 से 19 जून तक 14वाँ बाल युवा संस्कार सामूहिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर विदर्भ प्रांत के नागपुर, यवतमाल, अकोला, रामटेक, चंद्रपुर, गणेशपुर, काटोल, शेंदुर्जनाघाट, जरुड, वरुड, हिवरखेड, पाला, नेरपिंगलई, विरुर, रोंघे, आर्वी, चांदूर रेल्वे, मुर्तिजापुर, बोरगांवमंजू एवं मध्प्रदेश के सिवनी, बाबई आदि 27 स्थानों पर तत्त्वज्ञान की गंगा बहायी गयी।

शिविर में पण्डित फूलचंदजी मुक्कीरवार हिंगोली, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री काटोल, पण्डित श्रेणीकजी जैन जबलपुर, पण्डित श्रुतेशजी सातपुते नागपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित पीयूषजी सिंगतकर चंद्रपुर, पण्डित रवींद्रजी महाजन वसमतनगर आदि ४० विद्वानों के सहयोग से लगभग 2000 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

दिनांक 19 जून को नागपुर में वीतराग-विज्ञान भवन में सामूहिक समापन समारोह हुआ।

3. नौगांव (म.प्र.) में 21 स्थानों पर ग्रुप शिविर : यहाँ जैनत्व शिक्षण

समिति, नौगांव एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 10 जून तक बुन्देलखण्ड के 21 स्थानों पर जैनत्व बाल एवं युवा संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर 29 विद्वानों द्वारा तत्त्वज्ञान की अविरल धारा बहायी गयी। शिविर में लगभग 1200 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। इनके अतिरिक्त लगभग 600 साधर्मियों ने भी धर्मलाभ लिया।

शिविर का समापन समारोह दिनांक 10 जून को अतिशय क्षेत्र खजुराहो में रखा गया। समारोह की अध्यक्षता श्री शिखरचंदजी जैन (अध्यक्ष-खजुराहो कमिटी) ने की एवं प्रमुख विद्वान के रूप में श्री सुरेशचंदजी टीकमगढ (पिपरा वाले) उपस्थित थे।

शिविर का संयोजन पण्डित राहुलजी शास्त्री नौगांव, पण्डित रजितजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

4. बड़ौत (उ.प्र.) में 31 स्थानों पर ग्रुप शिविर : यहाँ मुमुक्षु मण्डल बड़ौत एवं खेकड़ा के तत्त्वावधान में जैन जागृति शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर बड़ौत परमागम मंदिर, गंगेरु, टीकरी, बाबली, खेकड़ा, बागपत, कांधला, सरुरपुर, बिनौली, सरधना, मेरठ, तीरगरान, कंकरखडा, मवाना, कैराना, मुजफ्फरनगर, शामली, सहारनपुर, रामपुर, मनिहारन, खतौली, छपरौली, बुढाना, देवबन्द, धामपुर सराय, हरिद्वार, ऋषिकेश, रुड़की, मैरूत, किरठल आदि जिलों के 31 स्थानों पर लगाया गया।

इस शिविर में पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विकासजी बानपुर, पण्डित कल्पेन्द्रजी खतौली, पण्डित विवेकजी दिल्ली, पण्डित अभिषेकजी दिल्ली, पण्डित श्रेयांसजी दिल्ली, पण्डित विवेकजी सागर, पण्डित कमलेशजी ध्रुवधाम, डॉ. ममता जैन एवं ब्र.सुधाबेन छिन्दवाड़ा आदि विद्वानों के अतिरिक्त लगभग 58 विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर-उद्घाटन श्री सुरेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी जैन बावलीवालों ने किया। प्रात: शोभायात्रा के पश्चात् पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन का लाभ मिला। सभा की अध्यक्षता श्री राकेशजी बोदी (रूबी एन्टरप्राइजेज) ने की। शिविर में लगभग 2550 शिविरार्थियों ने धर्मलाभ लिया।

इस शिविर के आयोजन हेतु कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम कोटा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

बड़ौत में समापन समारोह की अध्यक्षता श्री विनोदकुमारजी जैन (एडवोकेट) ने की। संचालन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर एवं पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर ने किया।

संपूर्ण शिविर की अध्यक्षता श्री नरेशचंदजी जैन (पारस चैनल) ने की। निर्देशन पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर ने तथा संयोजन पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित गौरवजी शास्त्री बावली एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली ने किया।

5. कारंजा (महा.) में 19 स्थानों पर ग्रुप शिविर : यहाँ श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम (जैन गुरुकुल) के तत्त्वावधान में महाराष्ट्र के पश्चिमी विदर्भ एवं मराठवाडा विभाग के विभिन्न 19 स्थानों पर दिनांक 1 से 9 जून तक सामूहिक धार्मिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर वाशिम, शिरपुर, हराल, सेनगांव, कलमनूरी, अंबड, बीड, ढासाला, विहीगांव,

अनसिंग, मालेगांव, रिसोड, हिंगोली, परभणी, सेलू, देउलगांवराजा, वरूड (बु.), मलकापुर, मंगरूलपीर आदि 19 स्थानों पर लगाया गया।

इस सामूहिक शिविर का उद्घाटन हिंगोली में मा.नरेन्द्रजी दोडल हिंगोली द्वारा हुआ।

शिविर में हर स्थान पर लगभग 40 - 70 बालकों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये एवं लगभग 800 शिविरार्थियों ने धर्मलाभ लिया। इस शिविर के आयोजन हेतु कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम कोटा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का समापन समारोह श्री म.ब्र.आश्रम कारंजा में संपन्न हुआ, जिसमें अध्यक्ष प्रा.श्री कीर्तिकुमार भोरे नासिक एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती विजयाताई भिसीकर थी।

इस शिविर का निर्देशन श्री भरतभाऊ भोरे कारंजा और श्री प्रमोदभाऊ चवरे ने किया। संयोजन पण्डित आलोकजी शास्त्री, श्री प्रकाशजी टोपरे, पण्डित सतीशजी गवारे कारंजा एवं पण्डित अनेकान्तजी जैन ने किया।

6. दिल्ली में 19 स्थानों पर ग्रुप शिविर : यहाँ अ. भा.जैन युवा फै. शाखा विश्वास नगर द्वारा दिनांक 4 से 12 जून तक ग्रीष्मकालीन बाल संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन एवं आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन के विद्यार्थियों का लाभ मिला।

इस अवसर पर दिल्ली के घेवरा मोड़, विश्वास नगर, शिवाजी पार्क, पांडव नगर, अशोका एन्क्लेव पीरागढी, छाछी बिल्डिंग कृष्णानगर, शंकर रोड़ राजेन्द्र नगर, वसंत कुन्ज, बहादुर गढ, रघुबरपुरा, मयूर विहार फेज-1, नोएडा, इन्दिरापुरम, खेकड़ा, पालम गांव, वसुन्धरा एन्क्लेव एवं डिप्टीगंज आदि 19 स्थानों पर 26 विद्वानों के माध्यम से तत्त्वप्रचार हुआ। शिविर में लगभग 1700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया, जिनमें 1200 बच्चे शामिल थे।

7. दिल्ली : यहाँ शिवाजी पार्क स्थित श्री शांतिनाथ दि.जैन मंदिर में दिनांक 23 से 31 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अशोकजी जैन, पण्डित अभिषेकजी जैन, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर द्वारा कक्षाएं ली गईं, जिनका अनेकों बालकों एवं साधर्मियों ने लाभ लिया।

शिविर में रत्नत्रय विधान एवं सम्मेदशिखर विधान भी संपन्न हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन श्री पृथ्वीचंदजी जैन ने किया।

8. ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ जैन स्वर्ण मंदिर में जैन नैतिक शिक्षण समिति द्वारा दिनांक 24 अप्रैल से 4 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में पण्डित विकासजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री मौ, पण्डित पवनजी शास्त्री मौ, पण्डित अक्षयजी मंगलार्थी, पण्डित चिद्रूपजी मंगलार्थी, पण्डित रिंकेशजी मंगलार्थी द्वारा शिक्षण कक्षायें चलाई गई।

शिविर में लगभग 350 बालकों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

9. साडवली-रत्नागिरि (महा.) : यहाँ श्री जैनोन्नति स्वाध्याय मंडल के तत्त्वावधान में दिनांक 26 से 31 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन दोनों समय पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी, पुणे द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर एवं दोपहर में श्रीमती सुधाताई चिवटे, बेलगांव द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में प्रात: प्रभातफेरी एवं जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् प्रतिदिन बालकों की तीनों समय धार्मिक कक्षायें संपन्न हुई, जिसमें बालबोध पाठमाला भाग 1 व 2 की कक्षा पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी, कु.अक्षदा मोहिरे व कु.कृतिका मोहिरे द्वारा ली गई। **– माधुरी वनकुद्रे**

10. सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट द्वारा दिनांक 5 से 11 जून तक चतुर्थ बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित आत्मप्रकाशजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित विवेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर का ध्वजारोहण इन्जी. सुनीलजी छतरपुर ने किया। विधानकर्त्ता डॉ. बासन्तीबेन शाह परिवार मुम्बई थे। शिविर में लगभग 300 बच्चों ने धर्मलाभ लिया। शिविर का संचालन पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित रामनरेशजी शास्त्री खड़ैरी ने किया।

11. जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर सेक्टर -7 में श्री नथमलजी झांझरी परिवार की ओर से दिनांक 1 से 12 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित नवीनजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, श्रीमती आरती जैन जयपुर एवं श्री सौम्य जैन जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर के बीच में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित रमेशचंदजी जैन लवाणवालों के विशेष प्रवचन का लाभ भी मिला।

विशेष उपलब्धि यह रही कि यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के सहयोग से प्रत्येक रविवार को प्रवचन हेतु विद्वान की व्यवस्था की गई।

12. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर दिनांक 31 मई से 7 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्घाटन श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर द्वारा ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। उद्घाटन सभा के मुख्य अतिथि फैडरेशन के मध्यप्रदेश प्रांत के अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर थे।

शिविर के मुख्य आयोजक के रूप में श्री अशोकजी जैन दिगम्बर परिवार के साथ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई एवं शास्त्री सुगंधी परिवार जबलपुर का सहयोग प्राप्त हुआ।

इस शिविर में जबलपुर एवं आसपास के गांवों के लगभग 450 बालक-बालिकाओं ने सहभागिता की।

सायंकालीन कार्यक्रमों में जिनेन्द्र भक्ति के बाद विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत संगीतमय कथा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रोजेक्टर पर बाल गीत विडियो, कत्लखानों में होने वाले अत्याचार

आदि का प्रदर्शन, प्रतिभा विकास की प्रतियोगितायें संचालित की गईं। 12 कक्षाओं के संचालन में पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित निपुणजी शास्त्री सरदारशहर, पण्डित विशेषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुकुमालजी शास्त्री नागपुर, श्रीमती स्वस्ति जैन देवलाली के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान श्री मनोजजी जैन, श्री श्रेणिकजी जैन, श्रीमती कान्ति जैन, श्रीमती अलका जैन, श्रीमती पूजा जैन का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सामूहिक कक्षा के साथ शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रमों में पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

यह शिविर जबलपुर मंडल के सभी सदस्यों के तन-मन-धन समर्पण के साथ फैडरेशन के युवा और समर्पित अध्यक्ष श्री संजयजी जैन, श्री अनुभवजी जैन और डॉ. मनोजजी जैन के अथक परिश्रम से सफल रहा।

पुरस्कार वितरण में श्री सुनीलजी जैन पायलवाला और श्री जितेन्द्रजी जैन का सहयोग प्राप्त हुआ। **– श्रेणिक जैन**

13. जसवंतनगर-इटावा (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 3 से 10 जून तक स्थानीय महिला मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने बालवर्ग प्रथम, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड ने बालवर्ग द्वितीय, पण्डित सचिनजी खनियांधाना ने किशोर वर्ग एवं कु. सपना जैन ने शिशु वर्ग की कक्षा ली। शिविर में सैंकड़ों बालकों एवं साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर के अन्त में दिनांक 10 जून को श्री राजीवजी जैन की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित किया गया। सभी शिविरार्थियों को श्रीमती रेखा जैन व श्रीमती लता जैन द्वारा पुरस्कृत किया गया। आभार प्रदर्शन श्री धनेशचंदजी जैन (शिविर प्रभारी) ने किया।

शिविर के पूर्व दिनांक 26 मई से पण्डित सचिनजी खनियांधाना द्वारा प्रात: प्रवचनसार का सार पर तत्त्वचर्चा, दोपहर में चौदह गुणस्थान एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक का सार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हो रहा है।

14. पिड़ावा (राज.) : यहाँ दिनांक 6 से 14 जून तक तीन लोक महामण्डल विधान एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा दोनों समय ग्रन्थाधिराज समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर प्रवचनों का एवं अन्त के तीन दिन में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा विधान पर प्रासंगिक प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, पण्डित रविजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, पण्डित शौर्यजी शास्त्री मण्डाना, पण्डित विरलजी जैन मंगलार्थी, पण्डित रमेशजी जैन लाम्बाखोह आदि विद्वानों द्वारा कक्षायें संचालित की गयी।

शिविर में 200-300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया, साथ ही बाल कक्षाओं में भी लगभग 200 बच्चे सम्मिलित हुये।

इस अवसर पर आयोजित विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा सम्पन्न कराये गये।

वेदी शुद्धि एवं विधान संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : भोपाल-विदिशा हाईवे रोड़ पर मात्र 30 मिनिट की ड्राइव पर अत्यंत सुरम्य पहाड़ियों की तलहटी में अवस्थित भूमि पर अध्यात्म केन्द्र के रूप में एक संकुल बनने जा रहा है। यहाँ एक भव्य जिनालय, प्रवचन हॉल, विद्यालय, नेचुरलपैथी औषधालय एवं विद्वत् निवास बनाने की योजना प्रस्तावित है। इस प्रांगण में लगभग 100 प्लाट एवं 100 फ्लेटों का निर्माण भी साधर्मी भाईयों द्वारा किया जायेगा। ज्ञातव्य है कि इस योजन के लिये दीवानगंज में 7 एकड़ भूमि की रजिस्ट्री हो चुकी है। इस भूमि पर अस्थायी आकर्षक सुंदर जिनमंदिर बनाकर उसमें वेदी शुद्धि एवं प्रतिमा विराजमान का कार्यक्रम दिनांक 3 जुलाई को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम के प्रारंभ में कोहेफिजा से दीवानगंज तक शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा को विराजमान कर पंचपरमेष्ठी विधान किया गया।

इस अवसर पर ब्र. हेमचंदजी 'हेम' भोपाल, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित जवाहरलालजी विदिशा, पण्डित चिन्मयजी विदिशा, पण्डित अनुरागजी, ब्र. चन्द्रसेनजी, पण्डित अनिलजी इन्जीनियर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री ललितपुर, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर आदि विद्वानों व गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त कुन्दकुन्द कहान दि.जैन ट्रस्ट दीवानगंज के समस्त ट्रस्टीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम में लगभग 700-800 लोगों ने लाभ लिया तथा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 8 हजार प्रवचनों के लगभग 100 डी.वी.डी. घर-घर पहुँचे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित रमेशचंदजी बांझल के निर्देशन में पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल भोपाल एवं पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न हुये।

इस प्रकार अस्थायी जिनमंदिर बनाकर वेदीशुद्धि का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा -

गुणस्थान विवेचन वर्ष

साधना नगर-इन्दौर (म.प्र.) में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा 2011-2012 को गुणस्थान विवेचन वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। जो साधर्मीजन इन कक्षाओं का लाभ लेना चाहते हैं, वे श्री विजयजी बड़जात्या से मो.नं. 09425066838 पर संपर्क करें। गुणस्थान विवेचन वर्ष में गुणस्थान की कक्षा लेने हेतु ब्र.यशपालजी जैन द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। उनका कार्यक्रम तय होने पर उसकी जानकारी यथासमय सभी को भेजी जायेगी।

ज्ञातव्य है कि 2007-08 को द्रव्य-गुण-पर्याय वर्ष, 2008-09 को छहढाला वर्ष, 2009-10 को तत्त्वार्थसूत्र वर्ष, 2010-11 को पुरुषार्थसिद्ध्युपाय वर्ष के रूप में मनाया जा चुका है।

राजस्थान के 15 जिलों में अहिंसा शाकाहार रथ प्रवर्तन

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राज. प्रदेश द्वारा दिनांक 29 मई से 12 जून तक निकाला गया अहिंसा शाकाहार रथ प्रवर्तन सानंद संपन्न हुआ।

दिनांक **29 मई को जयपुर से** निकला यह रथ 15 जिलों एवं 75 गांवों में भ्रमण करता हुआ अन्त में कोटा पहुँचा। सभी स्थानों पर रथ का भव्य स्वागत हुआ। रथ का स्वागत जैनों ने ही नहीं; अपितु अजैनों ने भी बहुत उत्साहपूर्वक किया। फैडरेशन के सदस्यों द्वारा सभी स्थानों पर वाहन रैली, जुलूस एवं सभा का आयोजन किया गया। प्रत्येक स्थान पर प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया, जो कि स्थानीय अखबारों में प्रमुखता से प्रकाशित होता था। लगभग 5 हजार कि.मी. का मार्ग तय करने वाले इस रथ प्रवर्तन में 22 विधायक एवं 12 सांसदों ने भी शिरकत की। सभी स्थानों पर ऐसा कोई समाज या वर्ग नहीं था, जिसने यात्रा का स्वागत नहीं किया हो।

दिनांक **29 मई को टोडरमल स्मारक भवन में** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं श्री ऋषि बंसल (राज.प्रदेश अध्यक्ष-भा.ज.यु.मो.) की उपस्थिति में अहिंसा शाकाहार रथ का उद्घाटन पूर्व गृहमंत्री एवं विधायक गुलाबचंदजी कटारिया ने किया।

दिनांक **30 मई को अलवर में** कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बनवारीलालजी सिंघल (विधायक) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ज्ञानदेव आहूजा (विधायक-रामगढ) थे। मुख्य वक्ता के रूप में श्री बच्चूसिंहजी व श्री खिल्लीमलजी (पूर्व नि:शक्तजन आयुक्त) उपस्थित थे।

दिनांक **31 मई को किशनगढ में** अ.भा. विद्यार्थी परिषद के युवाओं द्वारा रथ का भव्य स्वागत किया गया तथा नगर में वाहन रैली निकाली गयी।

दिनांक **1 जून को अजमेर में** महावीर सर्किल, सोनीजी की नसियां, सावित्री कन्या महाविद्यालय आदि स्थानों पर जनसमुदाय को एकत्रित कर शाकाहार और अहिंसा की प्रतिज्ञा दिलवायी गई।

दिनांक **2 जून को पाली में** जैन युवा संगठन द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सम्पतमलजी गांधी (अध्यक्ष-जैनसंघ सभा), पुष्प जैन (पूर्व सांसद), श्री ज्ञानचंदजी पारीख (शहर विधायक) एवं श्री केवलचंदजी गोलेछा (नगरपरिषद अध्यक्ष) उपस्थित थे। सभी ने अपना उद्बोधन देकर और शाकाहार रथ में सम्मिलित होकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया।

दिनांक **3 जून को फालना**-स्वर्ण मन्दिर तथा **रणकपुर** के विश्व प्रसिद्ध जैन मंदिर होता हुआ रथ **राजसमन्द, कांकरोली** पहुँचा।

मावली में जहाँ जैन समाज का एक भी घर नहीं है, वहाँ भी रथ का भव्य स्वागत किया गया तथा रात्रि में सभा आयोजित की गई। यहाँ दिनांक 3 जून को रथ पहुँचना था और समस्त जनसमुदाय द्वारा उस दिन अहिंसा दिवस मनाया गया तथा **मुसलमानों ने भी उस दिन मांसाहार का त्याग किया।**

दिनांक **4 जून को भीलवाड़ा** में हुई सभा के मुख्य अतिथि के रूप में श्री विट्ठलशंकरजी अवस्थी (विधायक-भीलवाड़ा), श्री सुभाषजी बहेड़िया (भाजपा-जिला अध्यक्ष) व श्री ओमजी नारायणीवाल (भूतपूर्व सभापति) उपस्थित थे।

दिनांक **4 जून** की दोपहर में **चित्तौड़गढ** में अ.भा.विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सम्मेलन में

परिषद- अध्यक्ष श्री मिथलेशजी व अन्य विद्यार्थियों द्वारा रथ का स्वागत किया गया। सायंकाल **बेगू** में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री वृद्धिचंदजी कोठारी (चैयरमेन-बेगू) थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री चुन्नीलालजी धाकड़ (पूर्व राज्यमंत्री) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री शांतिलालजी रातड़िया (अध्यक्ष-समस्त ओसवाल जैन समाज), श्री देवीलालजी कोठारी, श्री अशोकजी पाटनी (पार्षद), श्री संजयजी लुहाड़िया (पार्षद), श्री सुरेशचंदजी लुहाड़िया, श्री शांतिलालजी टोंग्या, श्री राकेशजी, श्री जमनालालजी आदि उपस्थित थे। मुख्य वक्ताओं के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री जिनेन्द्र शास्त्री के वक्तव्य हुये।

दिनांक **5 जून** को प्रात: **चित्तौड़गढ** में जैन समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी लोढा (चेयरमैन-नगरपालिका) एवं मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्रसिंहजी (सांसद) उपस्थित थे। इसके पश्चात् रथ **भीण्डर** होते हुए **लूणदा** पहुँचा, जहाँ कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री शंकरलालजी पचौरी एवं मुख्य अतिथि श्री चांदमलजी ललितजी कीकावत थे।

दिनांक **6 जून को रथ उदयपुर पहुँचा,** जहाँ श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर जिनवाणी शोभायात्रा के साथ ही अहिंसा शाकाहार रथ भी निकाला गया। इसी दिन रथ **ऋषभदेवजी, सेमारी, करावली** में भी गया, जहाँ श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभा को सम्बोधित किया।

दिनांक **7 जून को उदयपुर में** ही भव्य अहिंसा शाकाहार सभा का आयोजन मोहनलाल सुखाड़िया रंगमंच पर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री श्यामजी सिंघवी उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभा को संबोधित किया।

दिनांक **8 जून को रथ बांसवाड़ा** पहुँचा, जहाँ कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महिपालजी ज्ञायक ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री शांतिलालजी, श्री सुमतिलालजी लूणदिया व श्री धर्मेन्द्रजी चंगेरिया थे।

इसके पश्चात् रथ **साकरोदा** होते हुए दिनांक **9 जून को डूँगरपुर** पहुँचा, जहाँ रथ को वहाँ की मेयर सुशीला भील ने एस्कॉर्ट किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री दिलीपजी नागदा (अध्यक्ष-जैन नवयुवक मण्डल) थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री पूरणमलजी, श्री रोशनलालजी, श्री बदामीलालजी, श्री रमेशचंदजी एवं श्री विनोदजी उपस्थित थे।

दिनांक **10 जून** को आसपुर होते हुए रथ **प्रतापगढ** पहुँचा, जहाँ कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कमलेशजी दोशी (चैयरमेन-प्रतापगढ) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेन्द्रजी बोर्दिया एवं श्री रामलालजी थे।

दिनांक **11 जून** को पिड़ावा के कार्यक्रम में श्री राजेन्द्रजी जैन (भूतपूर्व सभापति-नगरपालिका), श्री महावीरजी जैन (भूतपूर्व सभापति-नगरपालिका) श्री प्रभुलालजी सोनी (अध्यक्ष-गायत्री मंदिर), श्री संजयजी राणा (पार्षद), श्री राजेन्द्रजी जैन बना (पार्षद), श्री पारसजी जैन (पार्षद), श्री मुकेशजी मासून (पार्षद) आदि महानुभाव उपस्थित थे।

दिनांक 12 जून को कोटा में रथ प्रवर्तन के समापन समारोह के अवसर पर अध्यक्ष के रूप में श्री पंकजजी मेहता (कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता) उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ओम बिड़ला (विधायक-कोटा दक्षिण) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री हरिओम शर्मा (पूर्व शिक्षामंत्री) उपस्थित थे। मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं अन्य वक्ताओं में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई एवं डॉ. पीयूषजी

चतर का मार्मिक उद्बोधन हुआ।

पाली में 5 मुस्लिम भाइयों ने आजीवन शाकाहार का संकल्प लिया। इसी प्रकार **प्रतापगढ में भी 3 अजैन भाईयों ने आजीवन शाकाहार** का संकल्प लिया।

इस यात्रा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित पुस्तकें 'अहिंसा' व 'शाकाहार' लगभग 11000-11000 की संख्या में जन-जन तक पहुँची। रथ के प्रमुख सारथी एवं निर्देशक श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (प्रदेश अध्यक्ष) थे।

श्री टोडरमल स्मारक भवन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु -

आमंत्रण रथ का प्रवर्तन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी-2012 में होने वाले पंचकल्याणक के प्रचार-प्रसार हेतु पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन दिनांक 26 जून को प्रारंभ होकर 15 जुलाई को सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन के मंगल अवसर पर ब्र.यशपालजी जैन एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा द्वारा रथ पर स्वस्ति बनाकर रथ का शुभारंभ श्री टोडरमल महाविद्यालय के समस्त छात्रों की उपस्थिति में भजनादि प्रस्तुत करते हुए धूमधाम से किया गया।

रथ के साथ पण्डित करणजी शाह बड़ौदरा, पण्डित मनोजजी जैन चीनी वाले मुजफ्फरनगर, पण्डित मधुवनजी मुजफ्फरनगर आदि विद्वान उपस्थित थे। दिनांक 5 जुलाई से पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली भी सम्मिलित हुये।

यह रथ दिनांक 27 जून को प्रात: रुड़की, दिनांक 28 जून को ऋषिकेश एवं 29 जून को देहरादून पहुँचा। रथ का सभी जगह अपूर्व उत्साह के साथ स्वागत किया गया और सभी जगह कलश आदि की बुकिंग के रूप में भरपूर राशियों के वचन भी संस्था को प्राप्त हुये। यह रथ सहारनपुर, कांदला, गंगेरु, मुजफ्फरनगर, खतौली, खेकड़ा, बड़ौत होते हुए दिनांक 15 जुलाई को जयपुर आ गया। इसप्रकार इस रथ द्वारा पूरे देश के मुख्य-मुख्य स्थानों पर भ्रमण कर साधर्मीभाइयों को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में जयपुर आने हेतु निमंत्रण दिया गया।

ब्र.यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

कोहेफिजा-भोपाल (म.प्र.) में दिनांक 3 से 18 जून तक प्रतिदिन दोनों समय क्षयोपशम आदि पंचलब्धि एवं लब्धिसार के आधार से कक्षायें चली। कठिन एवं अपरिचित विषय होने पर भी लोगों ने उत्साहपूर्वक कक्षाओं का लाभ लिया। कक्षा में प्रथमोपशम सम्यक्त्व का प्रकरण पूर्ण हुआ एवं क्षायिक सम्यक्त्व का प्रकरण प्रारंभ हुआ। लोगों ने भविष्य में भी आने का निमंत्रण दिया है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com